

# हितधारक/बौद्धिक संसाधन नेटवर्किंग

विभिन्न पाठ्यक्रम, अनुसन्धान, एवं कार्ययोजनाओं सम्बंधित ज्ञान साझाकरण एवं सामग्री सृजन के लिए आमंत्रित फेलो सदस्यों के अतिरिक्त अन्य शिक्षक, विषय विशेषज्ञ, एवं ज्ञान पिपासु आदि अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं

फेलो सदस्य वर्ग	कौन	सदस्ता शुल्क
वार्षिक*	शिक्षक, वैज्ञानिक, शोधार्थी (स्नातकोत्तर छात्र सहित), विषय विशेषज्ञ	1000/-
	स्नातक छात्र (UG छात्र)	500/-
आजीवन*	कोई भी व्यक्ति, जिसकी भारतीय ज्ञान परंपरा में रुचि हो	10,000/-

\*आवेदक के पास भारतीय ज्ञान परंपराओं के क्षेत्र में संबंधित गतिविधियों में भागीदारी होना चाहिए। फेलो सदस्यता के लिए अंतिम स्वीकृति कार्यकारी समितियों की सिफारिश पर आधारित होगी। SGSITS के छात्रों के लिए यह सदस्यता शुल्क देय नहीं होगा।

नोट: सभी सदस्यताओं के लाभों, नियमों और शर्तों के संबंध में नोट:

- विशेषज्ञ सत्रों, सम्मेलनों, पैनल चर्चाओं आदि में भाग लेने के लिए निःशुल्क पंजीकरण।
- एफडीपी, कार्यशाला और अन्य पाठ्यक्रमों के लिए पंजीकरण शुल्क पर विशेष छूट।

## संपर्क सूत्र

प्रो. नीरज के. जैन, कार्यकारी प्रमुख - 98272 25340

प्रो. विनोद पारे, शैक्षणिक एवं गतिविधि समन्वयक - 94259 38623

प्रो. राजेश खत्री, नेटवर्किंग समन्वयक - 94259 38566

प्रो. निधि ओसवाल, केंद्र प्रबंधन समन्वयक - 98264 31432



[www.sgsits.ac.in](http://www.sgsits.ac.in)



[coe\\_bgp@sgsits.ac.in](mailto:coe_bgp@sgsits.ac.in)



Design by @AkashRathore

23, सर एम. विश्वेश्वरैया मार्ग, वल्लभ नगर, इन्दौर, मध्य प्रदेश 452003



## भारतीय ज्ञान परंपरा उत्कृष्टता केंद्र



श्री गोविंदराम सेकसरिया  
प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान, इंदौर

## केंद्र: एक परिचय

श्री गोविंदराम सेकसरिया तकनीकी एवं विज्ञान संस्थान, इंदौर, भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त और संरक्षित ज्ञान तथा भारत की पारंपरिक एवं स्वदेशी प्रथाओं को NEP 2020 के अनुसार प्रसारित करने के लिए प्रतिबद्ध है। 29 जुलाई, 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) की घोषणा के साथ ही संस्थान ने भारतीय ज्ञान परम्परा पर तीन दिवसीय व्याख्यान श्रृंखला के माध्यम से संस्थान के शिक्षकों को जागरूक करने के बाद 2022-23 में एक नॉन-क्रेडिट आवश्यक विषय भारतीय ज्ञान परंपरा का सार (EIKT) शुरू किया था। संस्थान की शासी निकाय की १२७ वीं बैठक के मद क्र. १२७-०८(B) की अनुमोदना एवं 02 जुलाई, 2025 को संस्थान भारतीय ज्ञान परम्परा उत्कृष्टता केंद्र की कार्यकारी समिति के गठन ने के साथ ही इसकी औपचारिक शुरुआत हुई। यह उत्कृष्टता केंद्र बहु-विषयक अनुसंधान और शिक्षा के माध्यम से संस्थान के छात्रों और विद्वानों के साथ-साथ पूरे समाज के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय ज्ञान के प्रसार के लिए कार्य करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा पर ध्यान केंद्रित करते हुए, एनईपी 2020 में प्रस्तावित सुधारों को स्थानीय संदर्भ और भारतीय समाज की पारंपरिक प्रथाओं में देखा जाना चाहिए, क्योंकि कोई भी विकास अपनी मूल परंपराओं से जुड़े बिना खुद को लम्बे समय जिन्दा एवं प्रासंगिक नहीं रख सकता है। यह केंद्र सतत विकास, विज्ञान, और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान की दिशा में कार्य करता है। यह समान वैचारिक क्षेत्र वाले संस्थानों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों, और कार्यकर्ताओं के साथ एक नेटवर्क बनाने और अपनी गतिविधियों और कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय ज्ञान को संरक्षित, संवर्धित, प्रसारित और विकसित करने का प्रयास करता है।

## विजन:

उत्कृष्टता केंद्र भारतीय ज्ञान परंपराओं और पारंपरिक प्रथाओं को संरक्षित और बढ़ावा देने में खुद को स्थापित करता है, जिससे समाज की गतिशील जरूरतों को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

## मिशन:

छात्र और समाज को जीवन दर्शन के साथ संबंधित कॅरिअर निर्माण में भारतीय ज्ञान परंपराओं के महत्त्व प्रति जागरूक और शिक्षित करना एवं बहु-विषयक अनुसंधान को प्रोत्साहित करते हुए सांस्कृतिक, शिलालेखीय और शास्त्रीय साक्ष्यों का डिजिटलीकरण एवं विभिन्न माध्यमों से विभिन्न भारतीय ज्ञान परंपराओं को संरक्षित और संवर्धित करना।

## प्रमुख क्षेत्र:

- गणित और खगोल विज्ञान
- विज्ञान और इंजीनियरिंग
- अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज
- इतिहास, संस्कृति और सभ्यता
- दर्शन और धर्म
- लिपियाँ और भाषाएँ

## उद्देश्य

- अध्ययन सामग्री के निर्माण, अप्रकाशित ग्रंथों, शिलालेखों आदि के डिजिटलीकरण के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपराओं पर आधारित शास्त्र, संस्कृतियों और पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं का संरक्षण।
- भारतीय ज्ञान परम्परा (बीजीपी) उत्कृष्टता केंद्र के प्रमुख क्षेत्रों में अनुसंधान और विकास।
- इंजीनियरिंग और अन्य व्यावसायिक डोमेन में भारतीय ज्ञान परंपराओं पर आधारित उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देना।
- भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा।
- छात्रों और समाज के अन्य हितधारकों के बीच विभिन्न सम्मेलनों, सेमिनारों, प्रतियोगिताओं एवं अन्य माध्यमों से भारतीय ज्ञान परंपराओं का प्रसार।

## भारतीय ज्ञान परंपरा का संक्षिप्त सर्वेक्षण

### प्राचीन भारत का चिंतन

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
मन कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

महाभारत के दौरान श्री कृष्ण के द्वारा अर्जुन को दिया गया यह उपदेश भारतीय ज्ञान परंपरा की विषय वस्तु एवं महत्त्व का रहस्योद्घाटन करता है। भारतीय मनीषियों द्वारा सदैव ही कर्म प्रधान संस्कृति का उपदेश देकर संसार को पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी है। उन्होंने कर्म करते हुए ही अर्थात् भूत और भविष्य की व्यक्तिगत चिंता और महत्वाकांक्षाओं / फलों के ऊपर वर्तमान कर्म में आनंद रहने पर बल दिया है। लगभग सभी भारतीय ज्ञान परंपराओं में समस्त सांसारिक दुखों से निवृत्ति एवं निःश्रेयश अर्थात् मोक्ष सुख की प्राप्ति में वर्तमान पुरुषार्थ को प्रधानता के साथ प्रतिपादित किया है। वेद, उपनिषद, आगम, त्रिपिटक आदि वैदिक और श्रमण परंपरा का साहित्य न केवल निःश्रेयश सुख की प्राप्ति के ज्ञान से भरा है, अपितु वर्तमान जीवन-निर्वाह, सामाजिक, और सांस्कृतिक परंपराओं का अथाह भंडार है। जीवन निर्वाह एवं परंपराओं के सुसंचालन के लिए के लिए ये सभी ज्ञान परंपराएं विज्ञान, खगोल, कला, वाणिज्य, ज्योतिष, शासन, प्रशासन, यातायात, संचार, स्वास्थ्य, शिक्षा, आदि सभी की गहरी एवं दूरदर्शी व्याख्या करती हैं। इन्हीं परंपराओं से वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार भावी शोध तथा नवाचारों के माध्यम से वैश्विक सौहार्द एवं विकास के लिए आगे बढ़ने का रास्ता भी मिलता है।

### प्रमुख भारतीय ज्ञान परम्पराएं एवं दार्शनिक

भारतीय ज्ञान परंपरा, सनातन होने के कारण, अनादि-अनंत प्रवाहित ज्ञान को स्वीकार करती है। प्राचीन काल से भारत ने वैदिक और श्रमण दोनों धाराओं का पोषण किया है—वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, संहिताएं व स्मृतियां वैदिक परंपरा को नेतृत्व प्रदान करती हैं, जबकि आगम व त्रिपिटक साहित्य श्रमण परंपरा के माध्यम से जीवन के दार्शनिक व वैज्ञानिक आयामों को संरक्षित करता है। वेदव्यास, पाणिनि, ब्रह्मगुप्त, बल्लभाचार्य शंकर, गुणधर, पुष्पदंत, भूतबलि, यतिवृषभ, हरिभद्र, समंतभद्र, रामानुज, हेमचंद्र, कुन्दकुन्द, गौतम बुद्ध, नागार्जुन, नागसेन आदि महर्षियों के विचार आज भी वैश्विक चुनौतियों के समाधान में प्रासंगिक हैं। काल के उतार-चढ़ाव में अनेक ज्ञान-भंडार नष्ट या अप्रकाशित रहे। भारतीय परंपरा में परमाणु से ब्रह्माण्ड, भौतिक व अभौतिक दोनों का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है, जबकि आधुनिक विज्ञान भौतिक जगत तक सीमित है। इस कारण इसकी वैज्ञानिक स्वीकार्यता सीमित रही है। इन परंपराओं को सार्वभौमिक व वैज्ञानिक सिद्धांत के रूप में स्थापित करने हेतु तत्त्वमीमांसा व ज्ञानमीमांसा का व्यापक अध्ययन आवश्यक है, जो इस उत्कृष्टता केंद्र का उद्देश्य है।

### केंद्र क्रियान्वन की भावी योजना

- नियमित अकादमिक पाठ्यक्रम
  - भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय
  - Understanding Bharat
- विशिष्ट अकादमिक पाठ्यक्रम/विशेष कार्यशालाएं बौद्धिक चर्चा सत्र विशेषज्ञ व्याख्यान
  - संस्कृत भाषा/ प्राकृत भाषा: व्याकरण एवं साहित्य
  - योग एवं ध्यान
  - भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान एवं तकनीकी
  - भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं तिथि पत्रक
  - भारतीय अर्थनीति/ राजनीति एवं शासन
  - भारतीय दर्शन एवं ज्ञान कोष (वैदिक, श्रमण, एवं अन्य)
  - प्राचीन पाण्डुलिपि डिजिटलाईजेसन एवं शोध

